भजन

आज कितना प्यारा ये साथ समागम है
हर तरफ छाया ये इश्क का आलम है
पाक दर की शोभा बड़ी ही अनुपम है
गूंजती है जहाँ ये वाणी कुलजम है

1.) मेरे सतगुरु जी प्यारे राम रतन
बैठे हैं सामने, हैं सुखदाई चरन
रूह के नैना खोलूँ तो मिलता दरशन है
चरणों में बंध जाये रूह की चितवन है
आज कितना प्यारा ये.

2.) उनकी मेहर का, ये नजारा है
खिंचता आता यहाँ, साथ प्यारा है
चरणों में रह जायें, सभी की चाहत है
दुनियाँ अब ना भाये, हुई ये हालत है
आज कितना प्यारा ये.

3) सूरज कायमी का, आप बन के खिले
नींद उसी की उड़े, आप जिसको मिले
आप जब अपने हो हमें फिर क्या गम है
चरणों में ये जीवन कटे, फिर भी कम है
आज कितना प्यारा ये.